हिन्दी साप्ताहिक

Title Code:- UTTBIL00534

उत्तराखण्ड अभ्युदय

♦वर्ष -02 ♦ अंक-03 ♦देहरादून - रविवार 02 नवम्बर 2025 ♦पृष्ठ : 4 ♦मूल्य: 1/-

एक भारत की परिकल्पना को साकार करने में सक्रिय भूमिका निभाएं: सीएम

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शुक्रवार को लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की जयंती के अवसर पर घंटाघर में उनकी मूर्ति पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि दी एवं एकता पदयात्रा का शुभारंभ कर उसमें प्रतिभाग भी किया। इस अवसर पर उन्होंने स्वदेशी अपनाने और नशा मुक्त उत्तराखंड की शपथ भी दिलाई।

मुख्यमंत्री ने भारत के लौह पुरुष, भारत रत्न, सरदार वल्लभभाई पटेल को नमन करते हुए कहा कि उनके अदम्य साहस, दूरदर्शिता और राष्ट्र समर्पण की भावना के कारण ही आज भारत एक शक्तिशाली और एकीकृत राष्ट्र के रूप में खड़ा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरदार पटेल का सम्पूर्ण जीवन देश की एकता और अखंडता को समर्पित था। उन्होंने 560 से अधिक रियासतों को एक सूत्र में पिरो कर अखंड भारत का निर्माण किया। ऐसे महापुरुष के योगदान को नमन करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2014 से उनकी जयंती को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया, जो उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। उन्होंने कहा कि राज्यभर में 16 नवंबर तक प्रत्येक जिले के तीन स्थानों पर वॉकथॉन कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। प्रत्येक आयोजन स्थल पर 8 से 10 किलोमीटर की पदयात्रा के साथ नशा मुक्त भारत, एक पेड़ मां के नाम तथा आत्मनिर्भर भारत जैसे जन–जागरूकता अभियानों को भी जोड़कर समाज में सकारात्मक संदेश देने का कार्य किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह वॉकथॉन केवल एक दौड़ नहीं, बल्कि भारत की विविधता में एकता की भावना को सशक्त करने का माध्यम है। इससे युवाओं में राष्ट्र निर्माण, अनुशासन, और सेवा की भावना प्रबल होगी। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे सरदार पटेल के

आदर्शों को आत्मसात करते हुए एक भारत श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना को साकार करने में सक्रिय भूमिका निभाएं। जिला प्रशासन द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती पर 16 नवंबर तक विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस अवधि में डोईवाला और विकास नगर में भी ऐसे भव्य एकता पदयात्रा का आयोजन किया जाएगा।

इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज, गणेश जोशी श्रीमती रेखा आर्या, राज्यसभा सांसद नरेश बंसल, विधायक

कार्यों को समय से पूर्ण कराने को लगातार करें मॉनिटरिंग

देहरादून। मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन की अध्यक्षता में शुक्रवार को सचिवालय में कुम्भ मेला 2027 के लिए प्रस्तावित कार्यों की उच्च अधिकार प्राप्त समिति की बैठक सम्पन्न हुयी। बैठक के दौरान विभिन्न विभागों के प्रस्तावों को संस्तुति प्रदान की गई। मुख्य सचिव ने कुम्भ मेला 2027 से सम्बन्धित कार्यों की प्रगति की जानकारी ली। उन्होंने फेज–1 में अति आवश्यक प्रकृति के कार्यों को प्राथमिकता पर लेने की बात कही। कहा कि कार्यों को समय से पूर्ण कराए जाने हेतु लगातार मॉनिटरिंग की जाए। उन्होंने कहा कि जिन कार्यों के शासनादेश जारी नहीं हुए हैं, शीघ्र शासनादेश जारी किए जाएं। जिनके शासनादेश जारी हो गए हैं, और टेण्डर प्रक्रिया हो चुकी है, उन कार्यों को शीघ्र शुरू कराया जाए। उन्होंने मनसा देवी मंदिर के फेज–1 का कार्य शीघ्र शुरू कराए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि एक माह के अंदर इसका शासनादेश जारी किया जाए। उन्होंने कांगड़ा घाट में महिलाओं के लिए घाट की व्यवस्था सुनिश्चित किए जाने के निर्देश भी दिए।

मुख्य सचिव ने कहा कि घाटों पर श्रद्धालुओं का प्रवेश और निकास अलग–अलग स्थान पर होता है, जिससे जूते और सामान वापस लेने के लिए श्रद्धालुओं को फिर से वहीं वापस आना पड़ता है, जिससे अनावश्यक भीड़ होती है। उन्होंने घाटों के पास श्रद्धालुओं को

जूते और सामान रखने के लिए एक ऐसा मैकेनिज्म तैयार किए जाने निर्देश दिए हैं, ताकि श्रद्धालुओं को एग्जिट पॉइन्ट पर उनके जूते और सामान मिल जाए। उन्होंने सचिव लोनिवि को इसकी जिम्मेदारी सौंपी। सीएस ने पंतद्वीप और चमगादड़ टापू का ड्रेनेज प्लान सिंचाई विभाग द्वारा तैयार किये जाने की भी बात कही। उन्होंने कहा कि सिंचाई विभाग रानीपुर मोड़ और भगतसिंह चौक के जल भराव की समस्या का समाधान निकालते हुए शीघ्र प्रस्ताव तैयार करे।

जिलाधिकारी ने ली स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा बैठक

संवाददाता चमोली। जिलाधिकारी गौरव कुमार ने शुक्रवार को स्वास्थ्य विभाग, होम्योपैथिक और आयुर्वेदिक विभाग के समीक्षा बैठक ली। इस दौरान उन्होंने जनपद में स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी लेते हुए अधिकारियों को राज्य सरकार की योजनाओं का आमजन को शत प्रतिशत लाभ दिए जाने के निर्देश दिए। बैठक में जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी को सीएसआर फंड से क्रय किए गए एएलएस वाहन को शीघ्र क्रियाशील करने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने 108 वाहनों के संचालन और रख–रखाव को दुरुस्त करने की भी बात कही। उन्होंने सरकार की ओर से संचालित योजनाओं का पात्र लोगों को लाभ देने के लिए अन्य विभागों से भी समन्वय स्थापित करने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने मुख्य चिकित्साधिकारी को बदरीनाथ मास्टर प्लान के तहत निर्माणाधीन चिकित्सालय का स्थलीय निरीक्षण कर आवश्यक कार्य शीघ्र पूर्ण करवाने की बात कही। वहीं उन्होंने जिला आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी को सभी पंचकर्म केंद्रों पर सभी आवश्यक उपकरणों की आपूर्ति पूर्ण करने के भी निर्देश दिए।

इस मौके पर मुख्य चिकित्साधिकारी डा. अभिषेक गुप्ता, सीएमएस डॉ. अनुराग धनिक, डा. केके उनियाल, आशीष रावत, रणजीत सिंह, रचना आदि मौजूद थे।

रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम के तहत चमोली आयोजित किए गए कार्यक्रम

संवाददाता चमोली। राष्ट्र की एकता, अखंडता एवं भाईचारे के प्रतीक लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के मौके पर चमोली जनपद के विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस दौरान जिले में ग्वालदम, थराली, पोखरी, कर्णप्रयाग और गैरसैंण में कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्र की एकता, अखंडता और नशा मुक्त समाज बनाने की थीम पर किया गया। वहीं जनपद के गोपेश्वर में आगामी 9 व गौचर में 14 नवम्बर को रन फॉर यूनिटी के तहत कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। जिला प्रांतीय रक्षक दल अधिकारी धीरेंद्र नाथ द्विवेदी ने बताया कि शुक्रवार को रन फॉर यूनिटी के तहत आयोजित पैदल मार्च का राज्यसभा सांसद और पूर्व विधायक महेंद्र भट्ट ने शुभारंभ किया। यहां स्कूली बच्चों के साथ ही स्थानीय लोगों द्वारा विनायक धार से खेल मैदान तक पैदल मार्च निकाल कर लोगों को राष्ट्रीय एकता, अखंडता और नशा मुक्त समाज बनाने के लिए जागरूक किया।

सम्पादकीय

विधानसभा का विशेष सत्र

जनता स्वेच्छया यत्र, राज्यम् स्वयमेव विन्दते।
सत्तां समर्प्य शासनं, स्वप्नान् साकारयन्ति च।।
सत्तापक्षोपपक्षाभ्यां, धर्ममार्गः सुशोभते।
लोकतन्त्रं हि सर्वेषां, श्रेष्ठं शासनमुच्यते।।

अर्थात्

विभिन्न प्रकार की शासन व्यवस्था में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली को सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था कहा जा सकता है, जिसमें जनता अपनी आकांक्षाओं से अपनी सरकार चुनती है,अपनी सत्ता सौंपती है। लोकतांत्रिक शासन में सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों ही महत्वपूर्ण है, उपयोगी हैं।

लोकतंत्र की सुदृढ़ता और सफलता के लिए सत्ता पक्ष और विपक्ष में साम्य और संतुलन आवश्यक है। पर्वतीय क्षेत्र की जन आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए उत्तराखंड राज्य का गठन किया गया है।उत्तराखंड की राज्य स्थापना के रजत जयंती के अवसर पर 3 से 4 नवंबर, 2025 को विधानसभा का विशेष सत्र आहूत किया गया है। इस दो दिवसीय सत्र का उद्देश्य राज्य के 25 वर्षों के विकास पर चर्चा करना और भविष्य की योजनाओं पर विचार-विमर्श करना है। सत्र की शुरुआत राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के संबोधन से होने की संभावना है। उक्त विशेष सत्र के दौरान राज्य के 25 साल के विकास का मूल्यांकन करना और भविष्य के लिए नीतियों पर चर्चा किया जाना संभावित है। सत्र का उद्घाटन राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु कर सकती हैं।

शासन, बुनियादी ढांचा, शिक्षा, पर्यटन और पर्यावरण संरक्षण जैसे क्षेत्रों में राज्य की उपलब्धियों और चुनौतियों पर चर्चा की जाने किये जाने की संभावना है।

हे प्रभु ! हमारे मा.जनप्रतिनिधि राज्य की खुशहाली, विकास और जनता की आकांक्षाओं को पूर्ण करने का ईमानदार प्रयास कर सकें,ऐसी दृढ़ता और आत्मबल देना।हमारा राज्य सर्वश्रेष्ठ राज्य बने,ईश्वर से हरपल यही कामना है।

जय देवभूमि उत्तराखंड!!जय भारत!!

डॉ.गार्गी मिश्रा

भाजपा अनमनी,कांग्रेस जिंदा

हरिशंकर व्यास

यह विधानसभा चुनाव २०२३ की हकीकत और खूबी है। भाजपा में शिवराजसिंह अनमने है तो वसुंधरा राजे व रमनसिंह भी है। इनके साथ प्रादेशिक नेता भी अनमने माने जा सकते है। ठिक विपरित कमलनाथ, अशोक गहलोत व भूपेश बघेल के चेहरों को देख कर कोई नहीं कहेगा कि वे चुनाव में बूझे मन से है। निश्चित ही नरेंद्र मोदी और अमित शाह सतह के नीचे चुनावी जादू-मंतर बुनते-गुनते हुए होंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को विश्वास है किविधानसभा चुनावों में उनका जादू चलेगा। आखिर मोदी के मन में हिंदी प्रदेश है तो एमपी, राजस्थान और छतीसगढ़ के मन में भी मोदी! उनकीएक ऊंगली में चुनाव जीतने का सुदर्शन चक्र है और अमित शाह शाह उनके चुनावी रथ के एकलौते सारथी! तभी पार्टी का, प्रदेश ने. ताओं, संगठन व कार्यकर्ताओं का क्या अर्थ? सभी अनमने, बुझे मन से बस चुनाव लड़ते हुए। चुनाव लडने के मानों औपचारिक चेहरे।

मध्यप्रदेश के विधानसभा क्षेत्रों में भाजपा के विजयरथ घूमने शुरू हो गए है। इन पर नारा लिखा है- मोदी के मन में बसता है एमपी और एमपी के मन में मोदी। साथ ही प्रध ानमंत्री की मध्यप्रदेश के लोगों के नाम पर लिखी चि;ी भी बंट रही है। फोटो, पोस्टर सबमें नरेंद्र मोदी का चेहरा सबसे बड़ा और केंद्र में। उनके अगल-बगल में डाकटिकट जैसे आठ चेहरें। जैसे शिवराजसिंह चौहान, कैलाश विजयवर्गीय, नरेंद्रसिंह तोमर, ज्योतिरादित्य, प्रहलाद्ध पटेल आदि। उम्मी. दवार दिल्ली से, नारे दिल्ली से और सारा कैंपेन दिल्ली में डिजाईन। शिवराजसिंह चौहान यों भाषण दे रहे है, घूम रहे है पर वे भी यह जतलाते हुए है कि वे भी मोदीजी के मन में शायद बसे हुए है।

जानकारों की फीडबैक के अनुसार तमाम मंत्री, पुराने नेता अपने चुनावी पोस्टरों में केवल नरेंद्र मोदी का फोटो छपवा रहे है। अधिकांश उम्मीदवार नरेंद्र मोदी के साथ अपने चेहरे चिपका कर चुनावी पोस्टर बनाए तो आश्चर्य नहीं होगा।

इसके ठिक विपरित कांग्रेस में स्थिति है। मध्यप्रदेश में हर किसी से यह फीडबैक है कि कमलनाथ व दिग्विजयसिंह की बनवाई उम्मीदवार लिस्ट भाजपा के मुकाबले ज्यादा दमदार है। भाजपा के तमाम दिग्गजों का पसीना बहेगा। कमलनाथ ने टिकटार्थियों की प्रतिस्पर्धा के बीच सबको पहले से समझाया हुआ था कि जनता के बीच लोकप्रियता की कसौटी के सर्वे अनुसार ही टिकट होगा। न टिकट ऊपर से थौपे जाएगें और न पैसे के लेन-देन में टिकट बिकेंगे। कमलनाथ ने लगातार सर्वे करवा कर, विधानसभा क्षेत्रों के दांवेदारों से पारदर्शिता रख कांग्रेस में जो व्यवस्था बनाई उसमें मेरा मानना है कि प्रदेश में कांग्रेस न केवल जिंदा है बल्कि वह चुनाव अधिक जीवतंता से लड़ते हुए है। दो प्रदेशों में यह साफ दिख रहा है कि कांग्रेस ने जो चेहरे तय किए है उससे पार्टीजनों में विश्वास बना है।भूपेश बघेल और कमलना. थ दोनों ने अपने चेहरे और वचनपत्र (याकि घोषणापत्र) के जरिए लोगों का वह भरोसा, वह विश्वास बनाया है कि वे खुद, प्रदेश संगठन और कार्यकर्ता एकजुटता से चुनाव लडने में अपने आपको झौके रहेंगे।

ऐसा भाजपा में नहीं है। मध्यप्रदेश, रा. जस्थान और छतीसगढ तीनों राज्यों में कांग्रेस के उम्मीदवारों की लिस्ट प्रदेश और केंद्रीय नेतृत्व की पारदर्शी, बेबाक एप्रोच से बेहतर बनती लग रही है। राजस्थान में जरूर दिक्कत है लेकिन पार्टी अध्यक्ष मल्लिका. र्जुन खड़गे, राहुल गांधी ने केंद्रीय स्तर पर जैसी कवायद कराई है वह कांग्रेस के सुध रने, बेहतर होने का संकेत है।

कोई न माने इस बात को, लेकिन मैं यह सुनकर हैरान हूं कि प्रदेश स्तर पर, भाजपा के संगठन व संघ प्रभारियों के टिकटार्थियों के साथ व्यवहार में, केंद्रीय पदाधिकारियों के नामों को ले कर दुरूपयोग से झासेबाजी, लेन-देन और अव्यवस्था क्या गजब है! मैं यह सोच हैरान हूं कि सिर्फ दस वर्षों के ही सत्ता अनुभव में भाजपा-संघ का कैसा पतन हुआ जबकि कांग्रेस आज भी जिंदा है अपने पुराने ढर्रे और लोकलाज वाले व्यवहार में। शायद तभी कांग्रेस आईसीयू के बावजूद जिंदा है और वह कार्यकर्ताओं-नेताओं की अंदरूनी खींचतान, जीवंत राजनीति, अलग-अलग दबाव गुटों, धड़ों के चौल-बैलेंस वाला वह लोकतंत्र लिए हुए है जो मनमोहन सरकार के वक्त था तो राजीव गांधी व इंदिरा गांधी के वक्त भी था।

क्या विपक्षी गठबंधन में सब ठीक है?

अजीत द्विवेदी

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मध्य प्रदेश में विध ानसभा की कुछ सीट नहीं देने के लिए कांग्रेस को निशाना बनाया तो कहा गया कि विपक्षी गठबंधन में फूट पड़ गई और यह टूट सकता है। उध र बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी कांग्रेस पर हमला किया तब भी यही कहा गया कि गठबंधन टूट सकता है और विपक्षी गठबंधन में सब कुछ ठीक नहीं है। इससे पहले वामपंथी पार्टियों ने अपने असर वाले राज्यों में तालमेल से इनकार किया तब भी विपक्षी गठबंधन में सब कुछ ठीक नहीं होने की खबरें चलीं। आम आदमी पार्टी को लेकर रोज आशंका जताई जाती है कि अरविंद केजरीवाल किसी भी समय विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' को गच्चा दे सकते हैं। इस तरह की घटनाएं भाजपा के गठबंधन में भी हो रही हैं। हाल ही में तमिलनाडु में अन्ना डीएमके ने भाजपा से तालमेल तोड़ लिया है। आंध्र प्रदेश में पता ही नहीं चल रहा है कि भाजपा और टीडीपी का तालमेल होगा या परदे के पीछे से भाजपा वाईएसआर कांग्रेस से तार जोड़े रहेगी। पंजाब में भी अकाली दल के साथ उसका गठबंधन नहीं हो रहा है तो बिहार में लोक जनशक्ति पार्टी के दोनों खेमों में घमासान चल रहा है, जिसकी पंचायत भाजपा को करनी है। हैरानी की बात है कि इसके बावजूद एनडीए के बिखरने या सब कुछ ठीक नहीं होने की खबरें नहीं आती हैं। यह भारतीय मीडिया का चरित्र है वह सत्तापक्ष की कमियां नहीं बता सकती है।

बहरहाल, विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' का जो विवाद अभी दिख रहा है उस आधार पर किसी नतीजे पर पहुंचने की जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। क्योंकि अखिलेश यादव जो कह रहे हैं या नीतीश कुमार ने बिहार में जो कहा या सीपीएम का जो स्टैंड है वह सबकी अपनी अपनी राजनीति को लेकर है। हां, यह जरूर है कि अभी 'इंडिया' में सब कुछ ठीक नहीं लग रहा है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि विपक्षी गठबंधन बिखरने जा रहा है और सभी पार्टियां मिल कर लोकसभा का चुनाव नहीं लड़ सकती हैं। यह सही है कि विपक्षी गठबंधन की आखिरी बैठक ३१ अगस्त और एक सितंबर को मुंबई में हुई थी। उसके बाद से कोई बैठक नहीं हुई है। समन्वय समिति की एक बैठक १३ सितंबर को हुई थी, जिसमें भोपाल में विपक्ष की साझा रैली करने की सहमति बनी थी लेकिन वह रैली भी टल गई क्योंकि मध्य प्रदेश के अध्यक्ष कमलना. थ चुनावी सीजन में ऐसे नेताओं से दूर रहना चाहते थे, जो सनातन का विरोध कर रहे थे। समन्वय समिति में टिकट बंटवारे को लेकर भी चर्चा हुई थी और कहा जा रहा था कि ३१ अक्टूबर तक इस बारे में शुरुआती फैसला हो जाएगा। लेकिन अभी उस दिशा में भी काम आगे नहीं बढ़ा है।

इसका कारण यह है कि कांग्रेस इस समय विपक्षी गठबंधन की बैठक और सीट बंटवारे के काम में नहीं उलझाना चाहती है। इस समय पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव चल रहे हैं, जिसमें कांग्रेस का बहुत कुछ दांव पर लगा है। गठबंधन की बाकी पार्टियां इन राज्यों में नहीं हैं इसलिए उनकी चिंता आगे के चुनाव की है, जबकि कांग्रेस को इन पांच राज्यों की चिंता है। उसके सारे नेता राज्यों के उम्मीदवारों के चयन, रणनीति बनाने और प्रचार में बिजी हैं। इसलिए वे गठबंधन के बारे में नहीं सोच रहे हैं। दूसरी बात यह है कि कांग्रेस पांच राज्यों के चुनाव नतीजों से पहले विपक्षी पार्टियों के साथ सीट बंटवारे में नहीं पडना चाहती थी। कांग्रेस को लग रहा है कि पांच राज्यों में उसका प्रदर्शन बहुत अच्छा होगा और उसके बाद वह मोल. भाव करने की बेहतर स्थिति में होगी। हालांकि यह जोखिम लेने वाली बात है क्योंकि अगर पांच राज्यों में कांग्रेस का प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक नहीं रहा तो उसकी मोलभाव करने की क्षमता कम भी हो सकती है और तब विपक्षी पार्टियां उस पर ज्यादा हावी हो जाएंगे। फिर भी कांग्रेस सोच समझ कर यह जोखिम ले रही है।

जहां तक बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की नाराजगी का सवाल है तो उसका मुख्य कारण यह है कि नीतीश ने ही विपक्षी गठबंधन बनाने की पहल की थी और पहली बैठक पटना में कराई थी। तभी से वे उम्मीद कर रहे हैं कि उनको विपक्षी गठबंधन का समन्वयक या संयोजक बनाया जा सकता है। ले. किन तीन बैठकों के बाद भी इस बारे में फैसला नहीं हुआ। इससे वे आहत हैं। तभी वे बिहार में कांग्रेस कोटे से एक और मंत्री बनाने का फैसला भी नहीं कर रहे हैं। इससे प्रदेश स्तर पर नाराजगी बढ़ रही है। यह भी कहा जा रहा है कि राजद और जदयू दोनों मिल कर कांग्रेस को कम से कम सीटें देना चाहते हैं। इसलिए कांग्रेस की ओर से भी दबाव की राजनीति हो रही है। तभी नीतीश कुमार ने बिहार में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की मौजूदगी में एक कार्यक्रम में कह दिया कि भाजपा नेताओं के साथ उनकी दोस्ती कभी खत्म नहीं होगी। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस की मनमोहन सिंह सरकार ने केंद्रीय विश्वविद्यालय के बारे में उनकी बात नहीं सुन रही थी, जबकि २०१४ में बनी सरकार ने उनकी बात सुन ली। यह कांग्रेस पर दबाव बनाने की रणनीति के तहत उन्होंने कहा क्योंकि सबको पता है कि बिहार में दो केंद्रीय विश्वविद्यालय बनाने की मंजूरी कांग्रेस सरकार के समय ही हुई थी।

अखिलेश यादव की नाराजगी का कारण भी स्थानीय है। वे उत्तर प्रदेश में प्रदेश कांग्रेस की ओर से चलाए जा रहे अभियानों से आहत हैं। राज्य में कांग्रेस पार्टी दलित गौरव यात्रा निकाल रही है तो कांग्रेस के नेता मायावती से तालमेल के बारे में बात भी कर रहे हैं। इसी बीच कांग्रेस ने मध्य प्रदेश में समाजवादी पार्टी के लिए उसकी मांगी सीटें नहीं छोड़ीं तो अखिलेश यादव ने कहना शुरू कर दिया कि अगर राज्यों में गठबंधन नहीं हो सकता है तो राष्ट्रीय स्तर पर कैसे गठबंधन होगा। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस का रवैया यही रहा तो उस पर कौन भरोसा करेगा। हालांकि बाद में वे मान गए और विवाद खत्म किया। लेकिन इस बीच कांग्रेस और सपा नेताओं की ओर से भारी कटुता वाले बयान दिए गए थे। तभी यह कहा जाने लगा था कि विपक्षी गठबंध न बिखरने वाला है। लेकिन असल में ऐसा नहीं है। हर गठबंधन में पार्टियां बेहतर मोलभाव के लिए दबाव बनाती हैं और अंत में अपना हित देखते हुए समझौता करती हैं। 'इंडिया' के भीतर भी आखिरी समय तक यह खींचतान चलती रहेगी।

बनें सजग अभिभावक, दिखाएं बच्चों को राह

नई पीढ़ी की मां अपने कॅरियर, सामाजिक सरोकार और उपलब्धियों से कहीं अधिक इस बात पर जोर देती हैं कि बच्चे अनुशासन में रहें, गौरवान्वित करने वाले कार्यों से उसके सपनों को पूरा करें। यह सोच वर्तमान में किसी एक मां की नहीं, बल्कि नई पीढ़ी की हर मां की है। आज की मांओं की सोच बिल्कुल उस कहावत जैसी है कि श्हजार तारों के उजालों से एक चांद की रोशनी भलीश। तकनीक से गुंथी मौजूदा जिंदगी में परिपक्व होते बच्चों की परवरिश में सजगता के बाद भी अभिभावकों को ढेरों ऐसी समस्याओं से जूझना पड़ रहा है जो किसी चुनौती से कम नहीं हैं। इनमें बच्चों की अनुचित मांगें, बार-बार पैसे की डिमांड और स्वतंत्र होकर जीने की चाहत शामिल है। कई बार अभिभावकों और बच्चों के बीच यह समस्याएं संवादहीनता, वैचारिक मतभेद और विषम स्थितियों के तौर पर उपजती हैं।

टीनएजर्स का एज फैक्टर

किशोरावस्था का समय बहुत ही नाजुक दौर वाला होता है। बढ़ती उम्र के साथ ही उनमें जिज्ञासाएं भी तेजी से बढ़ती हैं। इस उम्र के बच्चों में पढ़ाई का दबाव, रिश्तों की परिभाषा समझने की जद्दोजहद और यौन आकर्षण होना सामान्य बात है। यह समय सही और गलत रास्ते चुनने का भी होता है। थोड़ी सी उपेक्षा या अनदेखी में बच्चे शराब, धूम्रपान की गिरफ्त में आते हैं और खुद निर्णायक की भूमिका में हो जाते हैं। कई बार इसकी परिणति अवसाद या बड़ी समस्या के रूप में अभिभावकों के सामने आती है। श्द फेडरेशन ऑफ गायनकोलॉजिकल इंडियाश् के सर्वे के मुताबिक भारतीय कॉलेजों में यह समस्या व्यापक रूप ले रही है। ऐसी समस्या से उबरने में थोड़ा वक्त लगता है लेकिन आसान उपाय यही है कि मांएं बच्चों को गलत और सही में अंतर समझाने के साथ ही उनसे प्यार की भाषा में पेश आएं।

बनाएं विश्वास की बुनियाद

एक नई पीढ़ी की मां इससे अधिक कुछ नहीं चाहती कि उसकी संतान जीवन में सफल हो, सुनहरे भविष्य का निर्माण करे, ईमानदार हो, लगन से काम करे और उज्ज्वल चरित्र के लिए पहचानी जाए। लेकिन छोटी उम्र में गलत निर्णय और बुरे दोस्तों की संगति के चलते कामकाजी अभिभावकों के बच्चों का बिगड़ना काफी संभावित होता है। अगर आपका बेटा या बेटी किसी ऐसी समस्या का शिकार है तो अधिक परेशान होने या सख्ती से पेश आने के बजाय मांओं को चाहिए कि बच्चे का विश्वास जीतने की कोशिश करें। अपने कार्यक्षेत्र और दिनचर्या के बारे में बच्चे से बात करें। ऐसे में बातचीत करने का सिलसिला शुरू होगा। इससे बच्चे के मन में मां के प्रति सम्मान बढ़ेगा और मां उसकी अच्छी दोस्त जैसी हो जाएगी। यह विश्वास उसे अपने बारे में खुलकर मां से हर बात कहने के लिए प्रेरित करेगा। उसे लगेगा कि मुझसे मां हर बात शेयर कर रही है, इसलिए मुझे भी उससे कुछ नहीं छुपाना चाहिए।

इंटरनेट और पाश्चात्य प्रभाव

आज के बच्चे बहुत टेक्नोसेवी हैं और वे हर कुछ इंटरनेट में ढूंढते हैं। अब बच्चे समय से पहले परिपक्व हो रहे हैं। उनमें अल्प आयु में ही यौन जीवन के बारे में जानने की उत्कंठा है। आज परिपक्व होती लड़कियां अपनी सुंदरता, परिधान और शरीर को लेकर बहुत सजग हैं। युवा लड़के खुद में अपने पसंदीदा अभिनेता को तलाशते हैं। उनके जीवन में बहुत छोटी उम्र में देर रात की पार्टियां, फ्रेंड सर्किल और बाहरी दुनिया जगह बनाने लगती है। अगर आपका बेटा या बेटी इस ओर कदम बढ़ा रहा है तो मां होने के नाते पहले आपको देखना होगा कि कहीं आपकी संतान भी तो इन सबमें दिलचस्पी नहीं रख रही है क्योंकि बच्चों में किसी भी चीज को देखकर स्वीकारने की प्रवृत्ति अधिक होती है। तो क्यों न हम बच्चों पर पहले से ही नजर रखें, जिससे वे इस तरह के किसी दुखद हादसे का शिकार न होने पाएं। खुद ऐसी पार्टियों से तौबा करें और घर पर ही पार्टी आयोजित कर लें, इससे बच्चों के साथ आपका भी मनोरंजन हो जाएगा।

हर समस्या का समाधान

कई बार बच्चों की फरमाइश और आदतों से मांएं घबरा जाती हैं। उसे पार्टी के लिए पैसा चाहिए, नए सेलफोन के लिए पैसा चाहिए, लेटेस्ट ड्रेस के लिए पैसा चाहिए। आज जिस तेजी से तकनीक बदल रही है, उसी तेजी से बच्चों की डिमांड भी बदल रही है। इसका साधारण सा समाधान यही है कि तनाव लेने या बहस में पड़ने के बजाय बच्चे को वास्तविक जरूरतों, घरेलू बजट और भविष्य के बारे में समझाएं। कोई भी नया गैजेट्स लेते समय उसकी पसंद का ध्यान रखें, जिससे थोड़े समय बाद वे फिर से नई डिमांड न रखें। बच्चों में बचत करने की आदत विकसित करें। इसके लिए बैंक में एकाउंट खुलवा सकती हैं और जरूरत पड़ने पर उससे पैसे निकालने के लिए भी कहें।

अपने झगड़े अलग सुलझाएं

आज के बोझ से लदे लेकिन तेज रफ्तार कामकाजी माहौल में दांपत्य में खटास और वैचारिक मतभेद तेजी से पनप रहे हैं। एक सजग अभिभावक बनकर बच्चों को दांपत्य के झगड़ों से दूर ही रखें। कई बार दांपत्य की कड़वाहट के चलते बच्चे अभिभावकों से दूरे होने लगते हैं और दूसरों से उनकी नजदीकी बनती हैं। अगर आपके जीवन में कुछ ऐसा घट रहा है तो बच्चों को इसे जाहिर कराने के बजाय दोनों लोग मिलकर उसे समय दें और बात करें। अगर आप मां हैं और बच्चे से अकेले बात कर रही हैं तो अपनी बातों में पति के बारे में न गलत बोलें और न ही कोई अनावश्यक चर्चा करें। इससे बच्चे के मन में माता-पिता दोनों के प्रति सम्मान और प्यार बरकार रहेगा। बच्चे बड़े हैं तो उन्हें बताएं कि आपकी उनके पिता से कोई लड़ाई नहीं,बल्कि सामान्य से वैचारिक मतभेद हैं।

कारगर है प्यार की भाषा

अभिभावकों की व्यस्तता व उपेक्षा के चलते बच्चों में पढ़ाई के प्रति अरुचि पैदा होती है। उनका शैक्षिक रिकार्ड खराब होने लगता है। ऐसे में बच्चे पर मानसिक दबाव बनाने से बेहतर है कि उसे अधिक से अधिक समय देने के साथ बातचीत का दायरा बढ़ाएं। उसके स्कूल, दोस्तों और दिनचर्या पर चर्चा करें। योग, मेडिटेशन और खेल में उसके साथ समय बिताते हुए कोर्स, टीचर और पढ़ाई के बारे में जानने की कोशिश करने से उसमें अपनी समस्या जताने का भाव पैदा होने लगेगा। इस तरह आप उसकी मूल समस्या को समझ पाएंगी। इस बात का हमेशा ख्याल रखें कि बच्चे प्यार की भाषा समझते हैं और दबाव व पिटाई का उन पर कोई असर नहीं होता।

जिंदा रखें ममत्व

बदली लाइफस्टाइल में कामकाजी लोगों में दूसरी शादी की आवश्यकता भी बढ़ी है। कई बार इसके चलते नई वैवाहिक पारी की शुरुआत के साथ पति की पूर्व पत्नी के बच्चों की परवरिश की जिम्मेदारी निभानी पड़ती है। अगर आपको ऐसी स्थिति का सामना करना पड़े तो बेहतर रहेगा कि आप बच्चों को संपूर्ण प्यार देने के साथ ही उन्हें ममत्व का अहसास कराएं। बच्चों के मन में यह नकारात्मक भाव कभी न आने दें कि आप उनकी जन्म देने वाली मां नहीं हैं। बच्चे बहुत समझदार होते हैं, इसलिए वे भी आपके लिए प्यार बरसाएंगे और साबित करेंगे कि वे आपके ही बच्चे हैं!

एशिया की विशालतम खारे पानी की झील व प्रवासी पक्षियों का स्वर्ग

यदि आप ओडिशा की यात्रा पर निकलें तो निश्चित रूप से लगभग 1100 वर्ग किमी में फैली चिल्का झील तक जाए बिना तो इसे अधूरा ही माना जाएगा। यह भारत की सबसे बड़ी एवं विश्व की द्वितीय सबसे बड़ी समुद्री झील है। ओडिशा के प्राकृति सौंदर्य में चार चांद लगा देने वाली चिल्का झील प्रवासी पक्षियों का स्वर्ग है। इसके नयनाभिराम द्वीपों की सैर, सूर्योदय व सूर्यारत का दृश्य और प्रवासी पक्षियों के झुंड एक अविस्मरणीय अनुभव बन जाता है। नाशपाती के आकार में फैली इस झील के एक ओर सागर है तो दूसरी ओर राजमार्ग व पहाड़ियां। यहां झील के मध्य में एक हिंदू देवी को समर्पित मंदिर भी है। इस झील की विशेषता यह भी है कि खारे पानी का झील वर्षा के दिनों में मीठे पानी की झील बन जाती है। चिल्का झील ओडिशा के लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है।

दर्शनीय स्थलरू-

झील-बंगाल की खड़ी से सटे चिल्का भारत में खारे पानी की सबसे बड़ी झील है जो ओडिशा से पुरी, खुर्द व गंजम तक फैली हुई है। यह विश्व की दूसरा विशलतम लैगून है। झील के एक ओर संकरा सा मुखद्वार है जहां से ज्वार के समय समुद्री जल इसमें आ समाता है। इस तरह इस सुंदर लैगून की रचना होती है। इसे 1973 में वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया और 1981 में इसे अंतराष्ट्रीय रूप से मान्यता प्राप्त हुई। इस झील में कालीजय द्वीप, आईलैंड, परीकुंड, बड़कुदा, हनीमून, कंतपंथ, कृष्णप्रसादर, नुवापाड़ा, सानकुद, बारकुल, रंभा व नलबाण आदि जैसे अनेक छोटे-छोटे द्वीप हैं। जहां आप नौका, मोटरबोट, क्रूज बोट, जलक्रीड़ा का आनंद ले सकते हैं। झील के तट पर हर वर्ष तारतारिणी मेला लगता है।

एवीफॉना-चिल्का झील में साईबेरिया साइबेरिया, आस्ट्रेलिया, रूस, कनाडा, फ्रांस, ईरान, इराक और अफगानिस्तान आदि स्थानों से पक्षी आते हैं। पक्षियों का आगमन अक्टूबर से आरंभ होता है और वे फरवरी तक चिल्का में रहते हैं। यहां आप पक्षियों की अनगिनत प्रजातियों को देख सकते हैं। यहां पक्षियों के झुंडों को देखना अपने आप में काफी रोमांचक अनुभव होता है।

फ्लोरा-चिल्का झील में सागर के खारे जल के अतिरिक्त महानदी, कुसुमी, कुशभद्रा और सालिया जैसी धाराओं के सम्मिलत होने के कारण इसमें मीठे जल का संगम भी होता है। सागर के खारे जल और नदियों के मीठे पानी का मिश्रण ही जलीय पौधों के लिए वरदान है। इस झील में जलीय वनस्पतियों से बने छोटे-छोटे द्वीपखंड मन मोह लेते हैं। यहां कई प्रकार की जलीय वनस्पति देखी जा सकती है।

फॉना-मछली पकड़ने के शौकीन लोगों को भी चिल्का झील बहुत भाता है। यहां मछली, झीगों व केकड़ों की 150 से अधिक प्रजातियां पाई जाती है। इस झील में जलीय जीव-जंतु प्रचार मात्रा में पाए जाते हैं। चिल्का झील प्राकृतिक सुंदरता का धनी है। साथ ही ओडिशावासियों के लिए आजीविका का साधन भी है। मछली पकड़ना ही स्थानियों लोगों की आजीविका का महत्वपूर्ण स्रोत है। यदि आप समुद्री जीव देखने का शौक रखते हैं तो चिल्का जाना न भूलें। यहां आपकों डॉलफिन देखना अवसर मिल सकता हैं।

क्या देखेंरू-

नौका विहार, मछली, घरेलू और प्रवासी पक्षी, डॉलफिन और जलीय जानवर

बोली जाने वाली भाषाएंरू-

उड़िया, बंगाली, हिंदी और अंग्रेजी

कैसे पहुंचेरू-

हवाई, रेल और सड़क मार्ग से आप चिल्का तक पहुंच सकते हैं। भुवनेश्वर निकटतम हवाईअड्डा है और निकटतम रेलवे स्टेशन रंभा और बारूगांव हैं। बारकुल व रंभा दोनों ही राष्ट्रीय राजमार्ग पांच पर स्थिर है। पुरी और कटक से आप बसें तथा टैक्सी ले सकते हैं।

गौ संवर्धन पर मंथनः उत्तराखंड गौ सेवा आयोग की कार्यकारिणी की अहम बैठक

देहरादून। उत्तराखंड गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष डॉ. पं. राजेन्द्र अणथ्वाल की अध्यक्षता में बृहस्पतिवार को मोथरोवाला स्थित पशुधन भवन सभागार में गौ सेवा

आयोग की कार्यकारिणी की बैठक संपन्न हुई। जिसमें राज्य के सभी जनपदों में गौ सदनों के निर्माण, संचालित गौ सदनों की स्थिति और गौ कल्याण कार्यक्रम की विस्तार से समीक्षा की गई। आयोग की बैठक में गौ माता को राष्ट्रमाता का दर्जा देने सहित गोवंश संरक्षण हेतु कई प्रस्तावों को भी पारित किया गया।

अध्यक्ष ने कहा कि शास्त्रों में गाय को माता के रूप में पूजा जाता है। जिस घर-गांव में गाय पलती है, वहां हमेशा संपन्नता रहती है। गोवंश आधारित प्राकृतिक खेती न केवल मिट्टी के बायोमास को बढ़ाकर कृषि भूमि को सुधारने मदद करती है, बल्कि गोपालन से जुड़े कुटीर उद्योग गोपालकों की जीविकोपार्जन भी करती है। देवभूमि में गौसेवा करना सबसे बड़ा सौभाग्य है। अध्यक्ष ने कहा कि गौवंश के सेवा के लिए राज्य में गौसदनों से जुड़े कुछ लोग अच्छा काम कर रहे है, लेकिन बडे दु:ख की बात है कि आज 60 प्रतिशत गौवंश सड़क पर है। गोवंश के प्रति क्रूरता बडी है। गौवंश के प्रति अपराध की रोकथाम के लिए सख्त प्रावध ान लाया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि गौवंश संरक्षण के लिए प्रावधानों को सख्त बनाते हुए कडाई से उसका अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। मा.अध्यक्ष ने निर्देश दिए कि राज्य के अंतर्गत निराश्रित, बेसहारा गोवंश को आश्रय उपलब्ध कराने हेतु शहरी विकास एवं पंचायतीराज विभाग के अंतर्गत संचालित निर्माणाधीन गौ सदन, गौशालाओं का निर्माण शीघ्र पूरा किया जाए। नए गौ सदन के लिए भूमि चयन और निविदा प्रक्रिया में तेजी लाए। कोई भी प्रकरण अनावश्यक लंबित न रहे। गौ सदनों की अवशेष देनदारी का भुगतान एवं उनकी समस्याओं का समयबद्धता से निस्तारण किया जाए। घायल, बीमार गोवंश के त्वरित उपचार एवं उचित देखभाल के लिए लिफ्टिंग वैन की पर्याप्त व्यवस्था रखे। नगर पंचायत एवं जिला पंचायतों में गौ सदन निर्माण की सुस्त प्रगति पर अध्यक्ष ने गहरी नाराजगी भी व्यक्त की। अध्यक्ष ने कहा कि पशु क्रूरता एवं गोवंश तस्करी जैसे अपराध करने वाले के विरुद्ध पुलिस स्तर से सख्त कार्रवाई की जाए। गोवंश पर अपराधों की पैरवी के लिए कानूनी सलाहकार नियुक्त किया जाए। गौ सदनों में गौवंश के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखते हुए पर्याप्त पौष्टिक आहार उपलब्ध कराया जाए। गौ सदनों को छूट पर साइलेज उपलब्ध कराने हेतु सहकारिता विभाग को प्रस्ताव प्रेषित किया जाए। बैठक में आयोग के सदस्यों ने अपने जनपद में गौ सदनों की स्थिति, समस्या और निदान के बारे में अपने सुझाव रखे। आयोग की बैठक में सर्वसम्मति से ये प्रस्ताव हुए पास

आयोग की बैठक में गौ माता को राष्ट्रमाता का दर्जा देने और सम्पूर्ण भारत में गोवंश अपराधों की रोकथाम के लिए समान कानून बनाने का प्रस्ताव भारत सरकार को प्रेषित करने पर सर्व सहमति व्यक्त की गई। वही उत्तर प्रदेश में गौ हत्या और गौ मांस की तस्करी जैसे अपराधों के लिए 10 वर्ष का कठोर करावास एवं 05 लाख जुर्माने का प्रावधान को उत्तराखंड राज्य में भी लागू करने, गौवंश को शारीरिक कष्ट पहुंचाने पर सजा का प्राविधान करने, गौवंश को सड़क पर छोड़ने वाले के विरूद्ध वर्तमान प्रावधान में दो हजार रुपये का आर्थिक दंड को बढाकर 10 हजार करने, शहरी क्षेत्र के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में भी गौवंश का पंजीकरण, टैगिंग फोटोग्राफी के साथ करने, गौवंश अपराध रोकने के लिए पुलिस विभाग के स्तर पर पृथक से गौवंश संरक्षण स्वाइड का गठन करने तथा दूसरे राज्यों से आने वाले वाहनों की नियमित चौकिंग, गौवंश की तस्करी रोकने के लिए अभियान चलाने, प्रत्येक गौवंश का जन्म और मृत्यु पंजीकरण अनिवार्य करने, नर गौवंश नंदी के संरक्षण के लिए जिला पंचायत और नगर पालिका में नंदीशाला की स्थापना, देशी प्रजाति की गायों के संरक्षण के लिए प्रोत्साहन योजना संचालित करने, भूसे और चारे की कमी को दूर करने के लिए मिलों को होने वाले भूसे की सप्लाई पर रोक लगाने, गौवंश से संबंधित कार्य एवं व्यवस्थाओं के लिए गौ आयोग को पर्याप्त धनराशि आवंटित करने, गौसदनों के पंजीकरण एवं मान्यता देने की प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाने, गौचर भूमि का चिन्हीकरण और अतिक्रमण मुक्त कराने का प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित किया गया।

बैठक में उप सचिव पशुपालन महावीर सिंह पंवार, संयुक्त सचिव वन सत्य प्रकाश सिंह, संयुक्त सचिव वित्त एस त्रिपाठी, डीडीएसपी नवीन चन्द्र सेमवाल, निदेशक यूसीबी प्रो.संजय कुमार, निदेशक पशुपालन उदय शंकर, सदस्य गौरी मौलेखी, कामनी कश्यप, कमलेश भट्ट, शंकर दत्त पांडेय, धर्मवीर सिंह गुसाई, शीतल प्रसाद, सतीश उपाध्याय, विजय वाजपेई, निदेशक पंचायती राज मनवर सिंह राणा, मुख्य अधिशासी अधिकारी यूएलडीडी डा.आरएस नेगी, सीईओ शिप बोर्ड डा. प्रलयंकर नाथ, संयुक्त निदेशक पशु कल्याण बोर्ड डा. हरेन्द्र कुमार, प्रभारी अधिकारी डा. उर्वशी आदि उपस्थित थे।

डीएम बंसल ने अचानक बुलाई जिला चिकित्सालय की प्रगति की समीक्षा बैठक

देहरादून। जिलाधिकारी सविन बंसल ने ऋषिपर्णा सभागार कलेक्ट्रेट में जिला चिकित्सालय कोरोनेशन के निर्माण कार्यों एवं एवं विभिन्न व्यवस्थाओं, सुविधाओं की अचानक समीक्षा बैठक बुलाई। बैठक में जिला चिकित्सालय में उपलब्ध सुविध

ाओं, उपकरणों की स्थिति, दवाओं की उपलब्धता, चिकित्सकीय सेवाओं की गुणवत्ता तथा अस्पताल में आने वाले मरीजों की संख्या की समीक्षा की गई। जिला प्रशासन के प्रयासों से विगत वर्ष जिला चिकित्सालय में प्रारम्भ किए गए एसएनसीयू से अब तक 500 बच्चे स्वास्थ्य लाभ ले चुके हैं। विगत बैठक में जिलाधिकारी ने एसएनसीयू को 06 बैड से बढाकर 12 बैड करने के निर्देश दिए गए थे, जिसके विस्तारीकरण की समीक्षा करने बताया गया कि अभी विस्तारीकरण नही हो पाया, जिसका कारण जानने पर 2 माह से फंड न होना बताया गया। फंड न होने की जानकारी 2 माह से संज्ञान में न लाने पर जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी जाहिर करते हुए प्रमुख चिकित्सा अध ीक्षक जिला चिकित्सालय को फटकार लगाई। एसएनसीयू विस्तारीकरण एवं अन्य महत्वपूर्ण आवश्यक सेवाओं हेतु डीएम ने मौके पर ही 91 लाख की धनराशि जारी करते हुए एक माह के भीतर एसएनसीयू विस्तारीकरण कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए।

जिला प्रशासन के प्रयासों जिला चिकित्सालय में निर्माणाधीन ब्लड बैंक की कार्यप्रगति जानने पर अवगत कराया गया कि ब्लड बैंक का 75 प्रतिशत् कार्य पूर्ण हो गया है जिस पर जिलाधिकारी ने माह फरवरी 2026 तक शेष कार्य पूर्ण करने तथा ब्लड बैंक संचालन हेतु मशीन, उपकरण चिकित्सक स्टॉफ, मैनपावर की व्यवस्था समयबद्ध पूर्ण करने के निर्देश दिए।जिलाधिकारी ने चिकित्सालय में एसएनसीयू अपग्रेड कार्यों, दिव्यांगजन के शौचालय, जनरल ओटी हेतु स्टेपलाईजर, चिकित्सालय के पुराने भवन दीवारों की मरम्मत, फायर हाईड्रेंट, फायर अलार्म, वाटर हाईड्रेंट, जन्ममृत्यु पंजीयन हेतु कलर प्रिन्टर, आदि कार्यों के लिए 91 लाख की धनराशि जिला योजना से मौके पर ही स्वीकृत की।

जिलाधिकारी ने कहा कि जिला चिकित्सालय में आने वाले प्रत्येक मरीज को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा मिलनी चाहिए। उन्होंने चिकित्सालय प्रबंधन को निर्देश दिए कि अस्पताल में स्वच्छता व्यवस्था, दवा वितरण प्रणाली तथा उपकरणों की कार्यशील स्थिति पर विशेष ध्यान दिया जाए। साथ ही चिकित्सालय में आने वाले मरीजों की समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए हेल्प डेस्क को और अधिक प्रभावी बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि चिकित्सालय में आध ारभूत सुविधाओं का निरंतर रखरखाव और सुधार प्राथमिकता पर किया जाए। जिलाधिकारी ने अस्पताल प्रबंधन से कहा कि डॉक्टरों एवं पैरामेडिकल स्टाफ की उपस्थिति सुनिश्चित की जाए तथा मरीजों के प्रति संवेदनशील व्यवहार अपनाया जाए।

प्रमुख चिकित्सा अधीक्षक जिला चिकित्सालय में सुविधाओं की जानकारी देते हुए बताया कि चिकित्सालय परिसर में संचालित ऑटोमेटेड पार्किंग से पार्किंग व्यवस्था में सुधार आया है है। उनके द्वारा जिलाधिकारी से आटोमेटेड पार्किंग निर्माण का अनुरोध किया गया, जिस पर जिलाधिकारी ने कार्यवाही के निर्देश दिए।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अभिनव शाह, प्रभारी अधिकारी स्वास्थ्य/उप जिलाधिकारी हरिगिरि, मुख्य चिकित्सा अधिकारी मनोज शर्मा, प्रमुख चिकित्सा अधीक्षक जिला चिकित्सालय मन्नु जैन, वरिष्ठ पैथोलॉली डॉ जेपी नौटियाल, डॉ शालिनि डिमरी, पीआरओ प्रमोद पंवार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी राजू सब्बरवाल, मैटर्न इन्दू शर्मा, सुशीला पंवार, प्रबन्धक आरती, आदि उपस्थित रहे।

सूबे के डेढ़ दर्जन राजकीय महाविद्यालयों को मिले स्थाई प्राचार्य

देहरादून। उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत डेढ़ दर्जन राजकीय महाविद्यालयों को स्थायी प्राचार्य मिल गये हैं। उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत के अनुमोदन के उपरांत पदोन्नत प्राचार्यों को नवीन तैनाती स्थल भी आंवटित कर दिये गये हैं। राजकीय महाविद्यालयों में प्राचार्य की तैनाती से प्रशासनिक व शैक्षणिक गतिविधियों में खासा सुधार होगा, जिसका लाभ इन महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को मिलेगा। प्रदेश के राजकीय महाविद्यालयों में प्रशासनिक व शैक्षणिक गतिविधियों को मजबूत करने के दृष्टिगत राज्य सरकार द्वारा तमाम प्रयास किये जा रहे हैं। साथ ही महाविद्यालयों को राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न रैंकिंग व नैक मूल्यांकन में बेहतर प्रदर्शन करने के लिये प्रशासनिक सुधार पर भी फोकस किया जा रहा है। इसके लिये प्रत्येक महाविद्यालय में स्थाई प्राचार्य की तैनाती सुनिश्चित की जा रही है। इसी कड़ी में विभागीय मंत्री डॉ. ध न सिंह रावत ने डेढ़ दर्जन प्रोफेसर व एसोसिएट प्रोफेसर के पदोन्नति प्रस्ताव को अनुमोदित कर उन्हें स्नातक प्राचार्य पद पर पदोन्नति की मंजूरी दे दी है। इन सभी प्राचार्यों के पदोन्नति आदेश शासन स्तर से जारी कर दिये गये हैं, साथ ही इन्हें नवीन तैनाती स्थल भी आवंटित कर दिये गये हैं। जिसमें सुश्री प्रीति त्रिवेदी को राजकीय महाविद्यालय पतलोट नैनीताल, सुरेश चन्द्र ममगाई को पौखाल टिहरी गढ़वाल, डॉ. शैराज अहमद को तलवाड़ी चमोली, डी.एन. तिवारी को गरूड़ बागेश्वर, डॉ. बचीराम पंत को मंगलौर हरिद्वार, सुश्री प्रणीता नंद को नरेन्द्रनगर टिहरी, डॉ. मृत्युंजय कुमार शर्मा को त्यूणी देहरादून, डॉ. सीमा चौधरी को गरूड़ाबांज अल्मोड़ा, पुष्कर सिंह बिष्ट को जसपुर ऊध मसिंह नगर, जयचन्द्र कुमार को काण्डा बागेश्वर, डॉ. अरविंद सिंह को उफरैंखाल पौड़ी, डॉ. मुकेश कुमार को नैनबाग टिहरी, डॉ. राधेश्याम गंगवार को थत्यूड़ टिहरी, डॉ. कमरूद्दीन लमगड़ा अल्मोड़ा, डॉ. कल्पनाथ सिंह यादव को नैनीडांडा पौड़ी, डॉ. विद्या शंकर शर्मा को घाट चमोली, डॉ. हरीश चन्द्र को कण्वघाटी कोटद्वार और डॉ. नर्वदेश्वर शुक्ल को राजकीय महाविद्यालय देवप्रयाग टिहरी गढ़वाल में स्नातक प्राचार्य के पद पर पदोन्नति प्रदान की गई है। इन सभी प्राचार्यों को एक सप्ताह के भीतर नवीन तैनाती स्थल पर अनिवार्य रूप से योगदान देना होगा, जिसकी सूचना शासन को आवश्यक रूप से उपलब्ध करानी होगी। प्राचार्यों द्वारा पदोन्नति का परित्याग करने पर फोरगो नियमावली के तहत कार्यवाही की जायेगी।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक **गार्गी मिश्रा** द्वारा इंटर ग्राफिक आफॅसेट प्रिंटर्स 64 नेशविला रोड़ देहरादून, उत्तराखंड से मुद्रित, 98, 2-फ्लोर, सनशाइन अपार्टमेन्ट, नागल हटनाला, कुल्हान, सहस्त्रधारा रोड, देहरादून - 248001 से प्रकाशित।

सम्पादकः
गार्गी मिश्रा
8765441328

समस्त विवाद देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे।